उत्तर का मैदानी क्षेत्र

- प्रायद्वीपीय पठार और हिमालय के बीच उत्तर का विशाल मैदान अवस्थित है।
- यह उत्तर में हिमालय, द० में विंध्याचल, पू० पूर्वांचल हिमालय, प० में किरथर व सुलेमान श्रेणियाँ हैं।
- क्षेत्रफल 7.5 लाख वर्ग किमी०
- भारतीय क्षेत्र में इसकी लं० = 2400 km. प० में चौ० - 500 km. पूरब में चौ० - 150 km.
- औसत ऊँचाई 200 m से कम, WB में 25 मी० से भी कम।
- इस मैदान का निर्माण सिंधु और उसके सहायक नदियाँ, गंगा-यमुना-ब्रह्मपुत्र और उसके सहायक नदियों के द्वारा लायी गई मलवा के निक्षेपण से हुआ है।

भौगोलिक इकाई

1. सिंधु-सतलज का मैदान
2. थार मरुस्थलीय क्षेत्र
3. ब्रह्मपुत्र का मैदान
4. गंगा-यमुना का मैदान

1. सिंधु-सतलज का मैदान

- इसे पंजाब का मैदान भी कहाजाता है।
- इस मैदान का निर्माण सिंधु और उसके सहायक नदियों के द्वारा लायी गई मलवा के निक्षेपण से
- इस मैदान का निर्माण सिंधु और उसके सहायक नदियों के द्वारा लायी गई मलवा के निक्षेपण से
- इसका निर्माण प्लीस्टोसीन कल्प में हुआ
- इस मैदान का विस्तार भारत के पंजाब, हरियाणा व उत्तरी राजस्थान में हुआ है।
- औसत ऊँचाई 200 m से कम
- इस क्षेत्र में कहीं-कहीं शुष्क नदियाँ और शुष्क क्षारीय झील पायी जाती है जिसे स्थानीय भाषा में धाँड कहाजाता है।
- कई नदी दोआब का विकास
  - (a) बिस्त दोआब - व्यास + सतलज
  - (b) बारी " - व्यास + रावी
  - (c) रचना " - रावी + चेनाब
  - (d) चाज " - चेनाब + झेलम
  - (e) सिंधुसागर " - सिंधु + चिनाब + झेलम.
- ढाल - उ० पू० से द० प० की ओर.
- सिंधु की सहायक नदियाँ शिवालिक को कई जगहों पर काट डाली है इस कटे हुए भाग को स्थानीय भाषा में चो कहते हैं।

2. थार मरुस्थल

- भारत के विशाल मैदान का ही एक भाग थार मरुस्थल है।
- विस्तार - भारत और पाकिस्तान के सीमावर्ती क्षेत्र में.
- लम्बाई 640 km, चौ० — 160 km.
- अरावली पर्वत के द० प० से उ० पू० स्थिति के कारण यह प्रदेश शुष्क प्रदेश में बदल गया है

- ढाल द० प० की ओर है।
- थार मरुस्थलीय क्षेत्र मिसोजोइक महाकल्प तक अरब सागर में डूबा हुआ
- होलोसीन कल्प के प्रारंभ में कुछ भूसंचलन के कारण अरब सागर का उत्तरी भाग ऊपर उठ गया और द० भाग - धँस गया।
- आज भी इस क्षेत्र में खारे पानी का कई झील मिलता है — साँभर झील, डिडवाना झील, उदयपुर का पिछोला झील।
- शुष्क प्रदेश क्षेत्र के कारण चट्टानों के अपक्षरण से बड़े पैमाने पर बालू का विस्तार हुआ है
- इस क्षेत्र में बरखान, धोरा, बालुका स्तूप — मरु० स्थलाकृतियाँ

2. ब्रह्मपुत्र का मैदान

- इसका विस्तार भारत के उ०पू० भाग में — उ० में हिमालय, द० में गारो, खासी, जयंतिया की पहाड़ी, पूरब में पटकोई बुम और प० में तीस्ता नदी के मध्य हुआ है।
- इसे असम का मैदान भी कहा जाता है।
- इस मैदान का निर्माण ब्रह्मपुत्र एवं उसके उसके सहायक नदियाँ और तीस्ता नदी के द्वारा लायी गई मलवा के निक्षेपण से हुआ है
- यह मैदान मूलतः रैम्प घाटी में अवस्थित है।
- यह भारत का बाढ़ प्रभावित क्षेत्र है।
- ढाल पूरब से प०, बांग्लादेश में उ० से द०
- औसत ऊँचाई 50-200m.
- ब्रह्मपुत्र नदी — विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप — माजुली का निर्माण

3. गंगा - यमुना का मैदान

- विस्तार - भारत के उत्तरी भाग में उ० में हिमालय, द० विंध्याचल पू० में राजमहल की पहाड़ी व प० में अरावली की पहाड़ी के मध्य स्थित
- हिमालय और प्रायद्वीपीय पठार से निकलने वाली कई नदियाँ गंगा नदी तंत्र का अंग बनती हैं
- सामान्य ढाल प० से पूरब।
- औसत ऊँचाई — 0-300m.
- गंगा नदी इस मैदान को दो भागों में बाँटती है

(i) उत्तरी गंगा का मैदान - सामान्य ढाल दक्षिण की ओर

(a) रोहिलखंड का मैदान

(b) अवध का मैदान

(c) गोरखपुर - देवरिया का मैदान

(d) मिथिलांचल का मैदान।

(ii) दक्षिणी गंगा का मैदान — ढाल उत्तर की ओर

(a) बुंदेलखंड का मैदान

(b) इलाहाबाद का मैदान

(c) भोजपुर का मैदान

(d) मगध का मैदान

(e) अंग का मैदान

संरचनात्मक दृष्टि से गंगा-यमुना के मैदान को चार भागों में बाँटा जाता है।

1. भाबर
2. तराई
3. बांगर
4. खादर

1. भाबर :- भाबर का विस्तार शिवालिक पर्वत के दक्षिण में हुआ है।

भाबर का विस्तार शिवालिक पर्वत के दक्षिण में हुआ है।

- यह प० में पोरबार पठार से तिस्ता नदी तक विस्तृत है।
- चौड़ाई 8-16 km.
- औसत ऊँचाई — 150-250मी०.

उत्पत्ति

- इसका निर्माण हिमालय से निकलने वाली नदियों के द्वारा लायी गई बोल्डर क्ले के निक्षेपण से हुआ है।

विशेषता

1. इसका निर्माण बोल्डर-क्ले से हुआ है
1. इसका निर्माण बोल्डर-क्ले से हुआ है।
2. इसका निर्माण शिवालिक के पदस्थली में हुआ है।
3. हिमालय से निकलने वाली नदियाँ इस क्षेत्र में आकर विलुप्त हो जाती हैं जिससे खंडित नदी प्रवाह का विकास होता है।
4. जलजमाव वाले क्षेत्रों में दलदली भूमि का विकास हुआ है
5. इस क्षेत्र में कई जलोढ़ पंख एवं जलोढ़ शंकु पाये जाते हैं।
6. यह पर्वत और मैदान के बीच संक्रमण पेटी है।
7. यह प्रदेश पथरीले धरातल न होकर दीर्घकाल तक निक्षेपण के कारण मिट्टी के आवरण से ढक गया है यद्यपि उसके नीचे पत्थर के टुकड़े हैं।

2. तराई :- भाबर के दक्षिण में तराई प्रदेश का विकास हुआ है।

भाबर के दक्षिण में तराई प्रदेश का विकास हुआ है।

- इसका निर्माण नमीयुक्त चिपचिपी मिट्टी के निक्षेपण से हुआ है।
- औसत ऊँचाई 150-200 m., चौड़ाई 15-30 km.

विशेषता

1. यह अत्यधिक नमी क्षेत्र है जहाँ पर्याप्त मात्रा में वर्षा होती है।
1. यह घने जंगलों से ढका हुआ है।
2. यह दलदली भूमि का विकास हुआ है।
3. यहीं-कहीं दलदली भूमि का विकास हुआ है।
4. भाबर प्रदेश के विलुप्त नदियाँ यहाँ धरातल पर पुनः दिखाई देती हैं